ॐ

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँ शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वरीभ्यः समाभ्यः॥

(ईशावास्योपनिषद् : ८)

वह (आत्मा) सर्वव्यापक, तेजोमय, अशरीरी, अक्षत, पेशियों से रहित, शुद्ध, अपापहत, सर्वद्रष्टा, सर्वज्ञ, सर्वोत्कृष्ट तथा स्वयम्भू है। उसने विभिन्न प्रजापतियों के लिए उनके अपने-अपने कर्तव्यों को नियत कर दिया है।

पूर्व अंक से आगे :

सांसारिक अस्तित्व के दु:ख

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

त्रिताप

यहाँ एक ओर से बिच्छू डंक मारता है, तो दूसरी ओर से सर्प डँसते हैं। एक ओर से मक्खी, कीड़े, मच्छर, काँटे तथा अन्य कीट आपको परेशान करते हैं। सूर्य आपको गरमी में जलाता है। ठण्ढ आपको शीत ऋतु में काटती है। इन्फ्लूऐंजा, प्लेग, एपेंडीसाइटिस, पायरिया, छोटी माता आदि आपको डराने के लिए तैयार हैं। इसके पश्चात् यहाँ तीन ज्वर हैंह्नह्नआध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक। ज्वर, मोह, लोभ, दु:ख एवं कष्ट आपको प्रतिक्षण मारते हैं।

कामना, क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, चिन्ता, व्यग्रता तथा उत्तरदायित्व आपको प्रतिक्षण सता रहे हैं। जिनको आपने प्यार किया, उनकी मृत्यु आपको गहरा झटका देती है। लेकिन फिर भी आपने इन अवास्तविक नश्वर अस्तित्व की इन्द्रियों के क्षणिक सुखों को नहीं त्यागा। विषय-सुखों की ऐसी प्रबलता है। आप अहंकारवश अपनी मूँछों पर ताव देते हुए कहते हैंह्नह्न''अरे मैं बहुत शक्तिशाली हूँ। मैं बहुत बुद्धिमान् हूँ। मैं कुछ भी कर सकता हूँ। भगवान् कुछ नहीं है।'' लेकिन जब आपको कोई बिच्छू डंक मारता है, तो आप बुरी तरह से चिल्ला पड़ते हैंह्नह्न''नारायण, नारायण, नारायण! कृपा करके मेरी सहायता करें। मुझे इस भयंकर दर्द से बचायें!'' यदि बाल सफेद हो जाते हैं, तो आप इनको काले करने के विभिन्न साधन ढूँढ़ते हैं। आपने पुनर्यौवन-प्राप्ति हेतु ग्रन्थि-प्रत्यारोपण की विधि का आविष्कार किया है। यदि दाँत गिर जाते हैं, तो आप नये दाँत लगवा लेते हैं। आपने कभी भी जीने और आनन्द उपभोग करने की इच्छा नहीं त्यागी है। आप बड़े ही दुर्भाग्यशाली हैं!

गहराई से विचार करें। ध्यान करें। निरन्तर सत्संग करें। अपने देश और मानवीयता की निष्काम सेवा करें। मुक्ति के चतुस्साधनों का विकास करें। भगवद्गीता, योगवासिष्ठ तथा श्री शंकर के विवेक चूड़ामणि का अध्ययन करें। विद्वान् संन्यासियों के पास जा कर अपने सन्देहों का समाधान करें। श्रवण, मनन, निदिध्यासन करें। अज्ञानता का आवरण हटायें तथा अपने आत्म-स्वरूप सच्चिदानन्द-स्वरूप में विश्राम करें। **''आत्मा वा अरे द्रष्टव्य: श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य:''**ह्नह्नआत्मा को अवश्य ही देखा जाना चाहिए, सुना जाना चाहिए, विचार किया जाना चाहिए, मनन किया जाना चाहिए (बृहदारण्यक उपनिषद् : ४/५)।

मान-सम्मान, उपाधियों, नाम-प्रसिद्धि, पद को त्याग दें। ये बिलकुल निरर्थक हैं। ये आपको स्थायी आनन्द नहीं प्रदान कर सकते। ये मात्र आपकी अज्ञानता में वृद्धि करते हैं। ये सभी मन के लिए नशे हैं। ये कष्ट तथा मानसिक अस्थिरता लाते हैं। यही वह

कारण है जिसके लिए राजा भर्तृहरि, राजा गोपीचन्द तथा भगवान् बुद्ध ने अपना राज्य, सुख-सम्पत्ति आदि सब-कुछ छोड़ दिया था। उन्होंने इसके साथ एक तुच्छ वस्तु के समान व्यवहार किया।

जीवन की अनिश्चितता

मात्र आपके अच्छे-बुरे कर्म ही मरणोपरान्त आपके साथ जायेंगे और भगवान् आपके कर्मों के अनुसार न्याय करेंगे। बाह्य विषयों के प्रति आकर्षण रुक जायेगा और वहाँ मात्र आन्तरिक अभिलाषा अथवा प्यास, जिसे तृष्णा कहते हैं, शेष रहेगी। इसी कारण गीता में लिखा हैह्वह्व''इन्द्रिय-विषयों में जो आनन्द नहीं लेते। जब परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है तो विषयानन्द भी उस संयमी से वापस मुड़ जाता है।''

मित्र! आपके अपने पूर्व के जन्मों में कितने माता, पिता, पत्नियाँ, पुत्र और पुत्रियाँ हुई हैं, क्या उनकी कोई सीमा है? और फिर इनके साथ लगाव और झूठे रिश्ते नहीं गये हैं। आपके भीतर विवेक नहीं आया है। कितना करुणाजनक दृश्य है!

क्या आप खाना, पीना और सोना दिन-प्रति-दिन वही कार्य करते हुए शर्म का अनुभव नहीं करते हैं? आपको अपनी उपाधियों और सम्मानों पर अभिमान है। क्या आपने अपने जीवन का थोड़ा भी विकास किया है? आपने हाल ही में आये बिहार और क्वेटा के भूकम्प से क्या शिक्षा ली है? क्या आप उस अविनाशी स्थान की प्राप्ति हेतु यत्नशील हैं, जहाँ समस्त कामनाएँ तथा तृष्णाएँ नष्ट हो जाती हैं? क्या आप जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य दैवी साक्षात्कार जो आपको अमरता, आनन्द और शान्ति प्रदान करता है, की प्राप्ति हेतु प्रयत्न कर रहे हैं?

वर्तमान में आये बिहार के भूकम्प में एक धनी साहूकार को स्वयं एवं अपने परिवार की रक्षा तथा भूख और मृत्यु से बचने के लिए मात्र नौ रुपयों के लिए भीख माँगनी पड़ी। एक पण्डित ने अपनी पुस्तकों को बेच कर धीरे-धीरे पच्चीस हजार रुपये एकत्र किये। लेकिन उसे अत्यल्प समय में ही यह धन अपने वक्ष के किसी गम्भीर रोग के उपचार में व्यय करना पड़ा। उसने सभी प्रकार की दवाइयाँ लीं, लेकिन उसे अपना घर छोड़ना पड़ा और उसने एक भिखारी की भाँति जीवन बिताया।

यहाँ जीवन एकदम अनिश्चित है। अनेक प्रकार के रोग शरीर पर आक्रमण हेतु तैयार हैं। मनुष्य इस क्षणिक जीवन से अन्धे की भाँति चिपका रहता है। वह सत्य को भूल गया है। हे मनुष्य, अपने मन को शुद्ध करके तथा प्रबल ध्यान का अभ्यास करके अपने भीतर की आत्मा में स्थायी शान्ति और आनन्द की खोज करो। स्वयं को संसार के दु:खों से बचाने के लिए यह राज-मार्ग है। आध्यात्मिक साधना में शीघ्र लग जायें। बाल सफेद हो रहे हैं। दाँत गिर रहे हैं। इन्द्रियाँ शीतल पड़ रही हैं। जब आप युवा हों, तभी ध्यान और जप का अभ्यास करें। जब आप नौकरी से सेवा-निवृत्त होंगे, तब वृद्धावस्था में आप कुछ नहीं कर सकते।

एक शुद्ध एवं शान्त मन प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। यदि आप ध्यान और योग में प्रगति करना चाहते हों, तो आपका मन ऐसा होना ही चाहिए।

भगवान् बुद्ध को उनकी युवावस्था से ही विवेक था। वे अपनी युवावस्था से ही सांसारिक अस्तित्व की सभी स्थितियों की अस्थायी प्रकृति से तथा उन सभी कष्टों और दुर्भाग्य से जिसमें सभी निमग्न हैं, प्रभावित थे। क्या आप दूसरे बुद्ध नहीं बन सकते हैं?

आपने आठ घण्टे सोने में बिता दिये और शेष निरर्थक गपशप में, झूठ बोलने में, दूसरों को धोखा देने में, स्वार्थी कार्यों में, धन कमाने में बिता दिये हैं। यदि आप प्रभु की सेवा में, उनके भजन गाने में तथा ध्यान में एक घण्टा भी नहीं दे सकते, तो आप आध्यात्मिक उन्नति की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं?

जीवन सम्पूर्ण दु:खमय है

भगवान् बुद्ध कहते हैंह्लह्ल''जीवन सम्पूर्ण दु:खमय है।'' आपको पतंजलि के इस सूत्र में पूर्वोक्त कथन के साथ समानता दिखायी देगी : **''सर्वं दुखं विवेकिन:**ह्लह्लविवेकी जनों के लिए वास्तव में सब दु:ख है।'' यह निराशावादियों का दर्शन नहीं है। यह अद्‌भुत आशावाद है; क्योंकि यह गहन वैराग्य को प्रेरित करता है, मन को विषय-सुखों से विमुख करता है और अमर अनन्त आत्मा के साक्षात्कार हेतु ईश्वर की ओर प्रेरित करता है।

''जिस प्रकार अपनी मांस खाने की इच्छा के कारण मछली इसमें लोहे के काँटे को नहीं देखती, उसी प्रकार मनुष्य अपनी विषय-सुखों की कामना में मृत्यु के फन्दे को नहीं देखता।''

तृष्णा को कैसे दूर करें?

तृष्णा का अर्थ है प्रबल अभिलाषा। किसी विषय के निरन्तर आनन्द लेते रहने से, उसके प्रति लालसा अत्यधिक बढ़ जाती है, यही तृष्णा कहलाती है।

आक्सफोर्ड अथवा कैम्ब्रिज् यूनिवर्सिटी का बड़ा शोध का विद्यार्थी बनना और एम. ए.,पी-एच. डी. की डिग्री प्राप्त करना अत्यन्त सरल है; लेकिन इन तृष्णाओं का उन्मूलन करना अत्यन्त कठिन है। यही कारण है कि श्री वसिष्ठ जी श्री राम से कहते हैंह्लह्ल''आप हिमालय को उखाड़ सकते हैं। आप सारे समुद्र का जल पी सकते हैं। आप अग्नि का गोला भी निगल सकते हैं। लेकिन तृष्णाओं का उन्मूलन करना अत्यन्त कठिन है। तृष्णा अनेक प्रकार से निरन्तर कष्ट देती है। ये तृष्णाएँ इस संसार का बीज हैं'' (योगवासिष्ठ)। (क्रमश:)

(अनुवादिका : शिवानन्द राधिका अशोक)

तत्त्वज्ञान

तत्त्वज्ञान को ही अपरोक्षानुभूति, भगवद्-साक्षात्कार अथवा ईश्वर-दर्शन कहते हैं। जो व्यक्ति इस ज्ञान से परिपूर्ण हो जाता है, उसकी समस्त चिन्ताएँ, बाधाएँ, पीड़ाएँ तथा कष्ट मिट जाते हैं और वह ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है जहाँ कोई अभाव नहीं रहता, कोई कामना तथा वासना नहीं रहती। वहाँ तो आनन्द ही आनन्द रहता है, पूर्ण शान्ति का साम्राज्य रहता है। **स्वामी चिदानन्द**

अति-सूक्ष्म (आध्यात्मिक) आत्म-विश्लेषण

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

'अभी और यहाँ' के अतिरिक्त आप भगवान् को कहाँ ढूँढ़ेंगे? 'कहीं और', 'कभी और', यह सब तो भ्रान्ति है। 'किसी और समय' जैसा कुछ नहीं है। जहाँ कोई समय नहीं, वह तो अनन्त है। वही सत्य है, वही केवल वास्तविकता है।

'अब और तब', 'यहाँ और वहाँ', यह सब तो आपके मन की उपज हैं जो कि माया है। यही वह जाल है जिसमें आप आबद्ध हैं। सर्वदा-विद्यमान के प्रति, सर्वव्यापक दिव्यता के प्रति जागरूक होने की अपेक्षा, हम 'समय' पर अपना ध्यान केन्द्रित किये रहते हैं, जो कहता है कि भगवान् 'अभी' 'यहाँ' नहीं हैंह्नह्नहमें उनको खोजना पड़ेगा।

यह इसलिए है, क्योंकि हम उपनिषदों के सम्बन्ध में यों ही लापरवाही से निर्बाध बात करते रहते हैं। कभी भी उपनिषदों को पढ़ते नहीं। सबसे प्रथम, सबसे छोटे और सरलतम उपनिषद्, ईशावास्योपनिषद् को भी कितने लोग पढ़ते हैं? केवल एक यही उपनिषद् यह बताने के लिए पर्याप्त है कि आप निरन्तर ईश्वर के सान्निध्य में रह रहे हैं। यह निकटतम है, यह सुदूर है, यह भीतर है, यही बाहर भी है। यह सर्वत्र है। यही, और केवल यही सत्य है।

इस महान् सत्य को प्रकट करने के लिए हमारे पूर्वजों ने केवल यही उद्घोषणा नहीं कीह्नह्न **'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्'** (इस संसार में जड़-चेतन जो-कुछ भी है, सबमें ईश्वर परिव्याप्त है)। प्रत्युत उन्होंने यह भी उद्घोषित कियाह्नह्न**'सर्वं विष्णुमयं जगत्'** (यह सब जगत् विष्णु द्वारा परिव्याप्त है) और **'सर्वं खल्विदं ब्रह्म'** (यह सब-कुछ वास्तव में ब्रह्म ही है)।

वह हमारे मन में से इस विचित्र मानसिक भ्रान्ति को हटाना चाहते थे कि हमें भगवान् की खोज में कहीं सुदूर वनों में अथवा पर्वत-कन्दराओं में जाना होगा। यदि आप वहाँ जायें, तो यही पायेंगे कि सैकड़ों स्मृतियाँ, कल्पनाएँ, मोह-माया और विभिन्न विचार ही आपके मन में भरे पड़े हैं।

भगवान् के पास जाने के लिए आपको जगह-जगह भटकने की आवश्यकता नहीं है। गुरुदेव ने कहा हैह्नह्न''तुम व्यर्थ में ही बाहर क्यों खोज रहे हो? मौन हो जाओ और देखो कि तुम्हारे भीतर ही यह 'मैं हूँ' के रूप में भगवान् विद्यमान् हैं।'' और वह सदैव ही ऐसा कहते रहते हैंह्नह्न''मैं हूँ! हे मानव, क्यों इधर-उधर भटकते हो? मैं हूँ; सुनो, मैं हूँ।'' वे निरन्तर कहते हैं; किन्तु हम अनसुना कर देते हैं, क्योंकि हम तो व्यस्त रहते हैं इस जगत् के कोलाहल को सुनने में और इसके शक्तिशाली मायावी आकर्षणों में!

भगवान् तो बुला रहे हैं; किन्तु यह सत्य एक किनारे कर दिया जाता है। और सबसे अधिक आश्चर्यजनक और दयनीय स्थिति तो यह है कि नास्तिकों द्वारा, अज्ञेयवादियों द्वारा, भ्रमित लोगों द्वारा अथवा गहन सांसारिकता में लिप्त लोगों द्वारा ऐसा नहीं किया जाता, प्रत्युत यह उपेक्षा तो गम्भीर साधकों, प्रभु-भक्तों, आध्यात्मिक जिज्ञासुओं और

आकांक्षियों द्वारा होती है। आप बिना सोचे-समझे अपने और शाश्वत भगवान् के मध्य एक दूरी बना लेते हैं; क्योंकि माया आपको सही ढंग से सोचने ही नहीं देती, गहन विवेकपूर्वक और गम्भीर आत्म-विश्लेषणात्मक ढंग से विचार ही नहीं करने देती।

आप स्वयं अपने ऊपर कभी भी दृष्टि नहीं डालते। आप अपनी आन्तरिक अवस्था को जानने के लिए, अपनी चेतनावस्था को जानने के लिए कि आप प्रति दिन, प्रति घण्टे किस भाव में, किस दृष्टिकोण से रह रहे हैं, कभी सोचते ही नहीं। आत्म-विश्लेषण केवल अपने दोषों को खोज कर उसमें सुधार करने के लिए ही नहीं किया जाता। यह स्वयं को जानने के लिए, अपने आन्तरिक सूक्ष्म तत्त्व को, अपने आध्यात्मिक तत्त्व को जानने के लिए भी होता है। यदि हम यह करें, तब ही जान सकेंगे कि हमने क्या करना है।

प्रत्येक को यह खोजना होगा कि व्यक्ति सर्वदा विद्यमान शाश्वत सत्य को स्वीकार करने को, उसे देख पाने को क्यों नकारता है। केवल तभी वह अपनी दोषपूर्ण दृष्टि को सुधार सकेगा। कई बार तो इसका कारण अनिच्छा होता है। कई बार ऐसी दृष्टि के कारण उत्पन्न हो जाने वाले परिणामों के कारण ऐसा होता है। यह असुविधापूर्ण, कष्टप्रद हो सकते हैं। कभी ऐसे नहीं भी हो सकते। कई बार सच्ची और गम्भीर इच्छा भी होती है; किन्तु पुराना स्वभाव बहुत कठिनाई से जाता है। वस्तु-स्थितियों को जानने के जो स्वभावजन्य ढंग बने हुए हैं, उनको उखाड़ फेंकना भी कठिन होता है। अथवा परिस्थितियों, वातावरण, परिसर, अड़ोस-पड़ोस, जिसके मध्य व्यक्ति रहता है, यह सब भी व्यक्ति को गलत बोध में धकेल देते हैं अथवा उसी प्रकार लगे रहने में विवश कर देते हैं। गलत ज्ञान तो पहले से होता ही है, हम वैसी ही गलत दृष्टि ले कर जन्मे हैं और इसी गलत दृष्टिकोण में ही पालित और पोषित होते रहे हैं। इसलिए व्यक्ति को अत्यन्त परिश्रमपूर्वक इसका अभ्यास तब तक करते रहना पड़ेगा, जब तक कि यह सही नहीं हो जाता।

अत: हमें प्रत्येक पग पर गहराई से परखना और विश्लेषण करना चाहिए। हमें सत्संग की भी शरण लेनी चाहिए और परिश्रमपूर्वक सद्ग्रन्थों का दैनिक स्वाध्याय भी करना चाहिए। हमें ऐसे व्यक्तियों का संग करना चाहिए जिनमें इस प्रकार की जाग्रति है, इस प्रकार की सही दृष्टि है, जो इसी प्रकार के पथ पर चलने वाले आध्यात्मिक व्यक्ति हैं। इस अनुचित बोध को हटाने के लिए ये सहायक प्रक्रियाएँ हैं। ये गलत ढंग जो हमें महान् वैदिक दृष्टि और अनुभव के केन्द्र 'स्व-प्रमाणित सत्य' (भगवान्) के प्रति अन्धा बना देने वाला है, इसको दूर करने में ये सब सहायक प्रक्रियाएँ हैं।

इस प्रकार हमें आध्यात्मिक जीवन में उन्नति करने की आकांक्षा रखनी चाहिए, और उस सर्वदा-विद्यमान सत्ता के दिव्य दर्शन की ओर सदा अग्रसर होते जाना चाहिए। तब हम एक नया पहलू प्रारम्भ करेंगे, क्योंकि हम नये सिरे से भगवान् में ही रहना, घूमना और जीना आरम्भ कर देंगे। हम भगवान् में निवास करते हैं और भगवान् हम में। अन्य किसी भी व्यक्ति, किसी भी वस्तु की अपेक्षा हम और भगवान् परस्पर अधिक निकटता से सम्बन्धित हैं।

यह महान् सत्य आपके जीवन का आधार बन जाना चाहिए; आपकी साधना, आपका आध्यात्मिक जीवन और आपकी निरन्तर, सतत, स्थिर चेतना बन जाना चाहिए। यही साधना और स्वाध्याय का फल है। समस्त आध्यात्मिक जीवन का अन्तिम फल भी यही

है। इसका उद्देश्य ही ऐसी मानसिक स्थिति बना देना, ऐसी स्थिति निर्धारण कर देना है कि तब साधक ईश-केन्द्रित हो जाता है, तब साधक सतत प्रकाश में निवास करने लगता है।

सभी साधनाओं का लक्ष्य अवबोधन में ऐसा परिवर्तन लाना है। अत: इस प्रकार करने और अनुभव करने का प्रयास करें। और गुरुदेव की 'विश्व-प्रार्थना' की अन्तिम पंक्ति, 'सदा हम तुममें ही निवास करें' को यथार्थ बनाने का प्रयास करें। तभी और केवल तभी इस पंक्ति का हमारे लिए कुछ अर्थ होगा।

और इस के लिए आपको सच्चाई और गम्भीरता से प्रयत्नशील होना चाहिए कि परमात्मा की विद्यमानता ही से यह सारा जगत् व्याप्त हैह्नह्नइसकी जागरूकता बनी रहे। जागरूक रहें कि प्रत्येक पल आप उस सर्वव्यापक, सर्वत्र विद्यमान परमात्मा में ही निवास करने के लिए प्रयत्नशील हैं। यही दिव्य जीवन है। आध्यात्मिक जीवन का आन्तरिक सार यही है। सभी साधनाओं, योग, भक्ति, आध्यात्मिक ज्ञान, सभी का आन्तरिक सार तत्त्व यही है।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

जीव और ब्रह्म

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

माण्डूक्योपनिषद् के प्रथम मन्त्र में ओंकार और इसके अर्थ का वर्णन ब्रह्माण्ड के सन्दर्भ में किया गया है। जैसा कि पहले भी बताया गया यह विषय-विशेष को भी सूचित करता है। यह एक सार्वलौकिक नाम है जो एक सार्वलौकिक रूप का निरूपण इस प्रकार करता है कि नाम और रूप संयुक्त हो कर किसी एक सत्ता का आभास कराते हैं। नाम सार्वलौकिक है और रूप भी सार्वलौकिक है, स्वाभाविक ही है कि दोनों को केवल एक ही अस्तित्व में एकीभूत होना है; क्योंकि दो सार्वलौकिक अस्तित्व एक-दूसरे से पृथक् कैसे सम्भव हैं? अत:, सार्वलौकिक नाम एक ही है जो सार्वलौकिक रूप में संयुक्त है। इस अपूर्वानुभूति में नाम और रूप एक हो जाते हैं। स्वयं में, यह अनुभूति न तो नाम है और न ही रूप। यह दोनों हैं और एक भी नहीं (It is both, and yet neither)। ईश्वर नाम द्वारा आचक्षित न तो केवल नाम ही है और न ही वह कोई वर्णन करने योग्य विषय है। सब मनुष्य ईश्वर के शरीर में निहित हैं, अत: उससे बाह्य अस्तित्व का कोई भी व्यक्ति उसे नाम कैसे दे सकता है? इसलिए, एक प्रकार से हम यह भी कह सकते हैं कि ईश्वर का कोई नाम नहीं है। कौन 'उसे' नाम से पुकार सकता है? कहाँ है वह व्यक्ति, जो उसे नाम से पुकार सकता है? क्योंकि, मूलत: कोई नाम नहीं है जो ईश्वर का अभिधान हो। उसका कोई रूप भी सम्भव नहीं है; क्योंकि रूप नाम के अनुरूप होता है। वस्तुत: वह अनिर्वचनीय है जो अन्ततोगत्वा ओंकार अथवा प्रणव नाम से अभिहित है और अनिर्वचनीय होने के कारण यह इस नाम से ही दृश्य है जो सर्वाधिक, सर्वोत्कृष्ट सम्भावित अर्थ प्रतिपादित करता है। यद्यपि उसका अपना कोई नाम नहीं है और कोई रूप भी नहीं है; हम, इस धरा के जीव उसके उस अलौकिक स्वरूप को प्रत्यक्ष नहीं देख सकते। आत्म-साक्षात्कार हेतु उस पर ध्यान करने से पूर्व हमें अपने अन्त:करण में उसका विचार करना होगा। यह उस अनिर्वचनीय, लोकातीत तत्त्व का अर्थपूर्ण और सांकेतिक अभिधान हैह्लह्लब्रह्मन्।

'**सर्व ँ् होतद् ब्रह्म**'ह्लह्लयह सब ब्रह्म ही है। इस प्रकार द्वितीय मन्त्र प्रारम्भ होता है। ''यह सम्पूर्ण सृष्टि केवल ब्रह्म ही है'', यह उपर्लिखित मन्त्र के प्रथम पाद का वास्तविक अर्थ है। 'ब्रह्माण्ड' शब्द के अन्तर्गत आने वाली प्रत्येक वस्तु ब्रह्म है। '**एतत् वै तत्**'ह्लह्ल निश्चित रूप से यह वही है। 'यह' और 'वह' दो पृथक् पद हैं जो दो पृथक् अस्तित्व अथवा विषयों की ओर संकेत करते हैं। 'वह' पद दूरस्थ विषय की ओर संकेत करता है, जब कि 'यह' पद समीपस्थ विषय का संकेतक है। अब, 'यह' 'वह' नहीं हो सकता। पुनरपि उपनिषद् की घोषणा है कि निश्चित रूप से 'यह' 'वह' है, यदि 'यह' 'वह' नहीं है और एक वस्तु दूसरी वस्तु हो सकती है तो दो वस्तुएँ हो ही नहीं सकतीं। पुनश्च,

'यह' और 'वह', इन दो प्रतिपादक सर्वनामों की आवश्यकता ही क्या है? **'भाग-त्याग-लक्षणा'** की क्रमिक परिभाषा के अनुसार जिसमें लक्षणा से पदार्थ का कुछ अंश छोड़ दिया जाता है और कुछ नहीं, यह (एतत्) और 'वह' (तत्) इन दो व्यंजक (बोधक) निर्देशों का सन्धान किया जाता है। आपने किसी व्यक्ति को कभी दूर देश में देखा हो और अब अपने समीप देख रहे हैं तो उसे ले कर इस प्रकार से दृष्टान्त देंगे : **''सोऽयं देवदत्तः''**ह्नह्न'यह' 'वही' देवदत्त है। देवदत्त नामक वह व्यक्ति जिसे मैंने दूर देश में देखा था, अब उसे मैं सन्निकट, सर्वथा दूसरे स्थान में देख रहा हूँ। स्थान पृथक् हैं, आयु में भी वह वृद्ध हो चुका होगा। सम्भव है, वह भाषा भी कोई और बोल रहा हो और यह भी सम्भव है कि दीर्घावधि के उपरान्त मिलने पर वह मुझे पहचान भी न रहा हो; किन्तु देश की दूरी और समयावधि पृथक् होने पर भी मैं उसे पहचान रहा हूँ। यह वही व्यक्ति हैह्नह्न**'एतत् वै तत्।'** 'यह' और 'वह' का सन्धान (सम्मिलन) इन दो सर्वनाम शब्दों के भाव के एकत्व से नहीं हुआ, प्रत्युत इन सर्वनाम शब्दों के वाचक विषय के अभेद के कारण हुआ। 'यह' और 'वह' किसी विषय का प्रतिनिधित्व नहीं करते। वे केवल एक विषय का संकेत देते हैं। किसी विषय को उपलक्षित करने वाले ये सांकेतिक सर्वनाम हैं और विषय का एकत्व 'यह' और 'वह' के अनुमान को त्यागने से होगा। किसी एक देश-काल में वह व्यक्ति कहीं और था और अब कहीं और है, ये विभिन्नताएँ उस व्यक्ति के अभिज्ञान में बाधक नहीं हैं। जो व्यक्ति तब भी वही था और अब भी वही है, ऐसे सदा एक व्यक्ति के एकत्व के अभिज्ञान हेतु देश-काल की दूरियाँ समाप्त कर दी जाती हैं, वहाँ भी और यहाँ भी। उपनिषदिक् निर्देशों को समझने के लिए यही विधि प्रयोग में लायी जाती है। **'सर्वं् ह्येतद् ब्रह्म'; 'अयमात्मा ब्रह्म'**ह्नह्नयह सब ब्रह्म है और यह आत्मा भी ब्रह्म है। उपनिषदों की शिक्षा का मानो सार ही इसमें निहित है, जिसे वेदान्त का अन्तिम शब्द कहा जा सकता है और जो ऋषियों के ज्ञान की पराकाष्ठा है। यह ब्रह्माण्ड जो इन्द्रियों के सन्निकट प्रतीत होता है, वह ब्रह्म ही है जो अगोचर प्रतीत होता है। सन्निकट प्रतीत होने वाला हमारा व्यक्तित्व भी उस अतीत, अगम्य प्रतीत होने वाले ब्रह्म के साथ एकत्व स्थापित करने में सक्षम है। और अन्ततः, यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने सन्दर्भ में 'यह' और ब्रह्म के सन्दर्भ में 'वह' कह कर संकेत करता है, तो जब 'यह' निश्चित रूप से 'वह' है, तो 'ये सब' भी निश्चित रूप से 'वह' है। यह व्यक्तित्व, यह जीवत्व, यह स्वत्व अन्ततः उस परब्रह्म से अभिन्न है जो दूर प्रतीत होता है। यदि समस्त व्यक्ति इस प्रकृति पर आस्था रखें, तो सम्पूर्ण 'मैं'(अहम्) 'उस' के साथ एक हो सकता हैह्नह्न'यह वह है'। यह सब 'वह' हो जाता है। **'सर्वं् ह्येतद् ब्रह्म।'** **(क्रमशः)**

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

यदि आपका भाव ईश्वर-पूजन का है और आपका काम उसके नाम के साथ जुड़ा है, तो आपका प्रत्येक काम भजन बन जायेगा। स्थान चाहे घर हो, खेत हो या जंगल हो, वह प्रभु का मन्दिर बन जायेगा। आप जहाँ भी चलेंगे, वह ईश्वर की ही प्रदक्षिणा होगी।

स्वामी चिदानन्द

<u>*बालकों के लिए दिव्य जीवन :*</u>

अपने प्रति जैसा व्यवहार चाहते हो, वैसा ही दूसरों के साथ करो

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

शिक्षक : मोहन, तुम्हें कहानी सुनना अच्छा लगता है?

मोहन : जी हाँ, यदि वह रोचक हो।

शिक्षक : बच्चो, कहानी तो हमेशा रोचक ही हुआ करती है। लो सुनो, एक कहानी सुनाता हूँ।

जार्ज वाशिंगटन दश साल के थे। उनके पिता ने उन्हें उनके जन्म-दिन पर उपहार में एक बढ़िया कुल्हाड़ी दी।

वह बहुत खुश हुए और अपने पिता के बगीचे में जा कर उस कुल्हाड़ी से खेलने लगे। जानते हो, कुल्हाड़ी से उन्होंने क्या किया ? एक सतालू के पौधे के चारों ओर की छाल काट डाली।

शाम को उनके पिता घूमने के लिए बगीचे की ओर गये। छाल कटी देख कर वह बहुत नाराज हुए। पूछने लगेह्नह्न''किसने इसे काटा है? उसे मैं भारी सजा दूँगा।''

वाशिंगटन डर से काँप उठे। लेकिन वह बहादुर थे। उन्होंने कहाह्नह्न''पिता जी, मैंने अपनी नयी कुल्हाड़ी से इसे काटा है।''

मोहन : पिता ने उन्हें खूब मारा होगा, गुरु जी?

शिक्षक : धैर्यपूर्वक सुनते जाओ। पिता ने उन्हें अपनी गोद में उठा लिया और कहाह्नह्न''प्यारे बच्चे! तुम सच बोले, इसकी मुझे बड़ी खुशी हुई। इस बार मैं तुम्हें प्रसन्नतापूर्वक माफ करता हूँ।''

मोहन : क्षमा कर दिया उसे? मैं उसका पिता होता तो खूब थप्पड़ लगाता।

शिक्षक : यह तुम्हारा गलत विचार है। पिता ने इसलिए माफ किया कि वह सच बोला। वाशिंगटन अपने सारे जीवन में एक बार भी झूठ नहीं बोले। सभी लोग उन पर विश्वास करते थे। वे आगे चल कर अपने देश के महान् व्यक्ति बने। जो मनुष्य अपनी गलती स्वीकार कर ले, उस पर पश्चात्ताप करके यह संकल्प करे कि आगे फिर वह कभी गलती नहीं करेगा, तो वह क्षमा के योग्य है और उसे क्षमा कर देना चाहिए। यह दिव्य मार्ग है। दया, सहानुभूति, प्रेम, करुणा, क्षमा, सत्यह्नह्नये दिव्य गुण हैं। यदि हम दिव्य मनुष्य बनना चाहें, तो हमें सहिष्णुता, धैर्य, दृढ़ इच्छा-शक्ति, विश्व-प्रेम आदि गुणों का विकास करना चाहिए। जान लो, तुम्हारे मित्र के हाथ से किसी तरह तुम्हारी घड़ी टूट जाती है या तुम्हारा कुछ नुकसान हो जाता है, तब तुम क्या करोगे ?

मोहन : उसे हरजाना देना चाहिए या दण्ड भोगना चाहिए।

शिक्षक : फिर से तुम गलती कर रहे हो। अगर वह तुम्हारे प्रति किये हुए अपने अपराध के लिए पश्चात्ताप करे. . .?

मोहन : नहीं गुरु जी, बिना चूँ किये उसे हरजाना देना ही चाहिए अथवा उचित दण्ड भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए। मैं उसे किसी तरह भी छोड़ नहीं सकता।

शिक्षक : मान लो, संयोग से तुम्हारे हाथों से उसकी घड़ी टूट जाती है। यह सच है कि तुमने जान-बूझ कर नहीं तोड़ी। क्या इस दशा में तुम दण्ड भुगतने या मूल्य चुकाने के लिए तैयार हो?

मोहन : जी नहीं, क्योंकि मैंने जान-बूझ कर नहीं तोड़ी है।

शिक्षक : तब तुम अपने मित्र पर क्यों शर्तें लादना चाहते हो? अपने प्रति दूसरों से जैसा व्यवहार चाहते हो, तुम भी उनसे वैसा ही व्यवहार करो। यह स्वर्ण-नियम ध्यान में रखोह्ह्‌‌‌‌‌‌‌"किसी ने तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार किया, तो बदले में भला व्यवहार करो।" बदला लेने की बात मत सोचो। क्षमा करो। उदार बनो। विशालहृदयी बनो। दानशील बनो। तुम्हें इन दैवी गुणों को विकसित करना चाहिए। तो अब समझे, ऐसी परिस्थिति में कैसा व्यवहार करना चाहिए ?

कोई तुम्हारी निन्दा करे, तो तुम क्या करोगे? क्या तुम उसी तरह व्यवहार करोगे?

मोहन : जी, बिलकुल नहीं। मैं उस पर ध्यान नहीं दूँगा और तटस्थ रहूँगा; क्योंकि अभी-अभी आपने कहा कि बदला नहीं लेना चाहिए, भले रहना चाहिए और बदले में भला ही करना चाहिए।

शिक्षक : बहुत सुन्दर। यह है मूल्यवान् बात। तुम दिव्य पुरुष बनना चाहते हो या आसुरी व्यक्ति? राम बनना चाहते हो या रावण?

मोहन : निश्चय ही मैं राम बनना चाहता हूँ।

शिक्षक : वाह! बच्चो! समझ लो कि प्रेम मिलता है प्रेम से और द्वेष से द्वेष ही मिलता है। तुम दूसरों से प्यार करोगे, तो वे भी तुम्हें प्यार करेंगे। ऊपर कहे हुए गुण विकसित करोगे, तो तुम एक आदर्श बालक बनोगे। ईश्वर तुम्हें प्यार करेंगे और तुम पूरी तरह से सफल हो जाओगे।

तीन नियमों को जानते हो?

मोहन : जी, नहीं, वे कौन से हैं? कृपया बतायें। मैं उनके अनुसार चलने का प्रयत्न करूँगा।

शिक्षक : बहुत अच्छा। तुम होशियार हो। लो सुनो।

(१) लौह-नियम क्या है?
यह है असभ्य लोगों का नियमह्ह
किसी ने कुछ भला किया
तो बदले में उसके साथ बुराई करो।

(२) रजत-नियम क्या है?
यह है व्यावहारिक लोगों का नियमह्ह
किसी ने तुम्हारा बुरा किया
तो बदले में तुम भी उसके साथ बुराई करो।

(३) स्वर्ण-नियम क्या है?
यह है धार्मिक लोगों का नियमह्ह
किसी ने तुम्हारा बुरा किया
तो बदले में तुम उसके साथ भलाई करो।

तो प्यारे मोहन, मुझे बताओ, तुम कौन-सा नियम अपनाना चाहते हो?

मोहन : स्वर्ण-नियम मैं पालन करना चाहता हूँ।

शिक्षक : बहुत सुन्दर! ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे!

मोहन : धन्यवाद, गुरु जी।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

बाल-स्तम्भ

वे जी कर भी नहीं जीते

स्वामी रामराज्यम्

एक रेलवे स्टेशन पर एक पिता और उसकी पुत्री प्लेटफार्म पर चढ़ने के लिए रेल की पटरी पार कर रहे थे। पहले पिता प्लेटफार्म पर चढ़ा। पुत्री पीछे थी। उसने देखा कि जिस पटरी को वह पार कर रही है, उसी पर एक इंजन चला आ रहा है। वह घबड़ा गयी। घबड़ाहट के कारण न वह जल्दी से प्लेटफार्म पर चढ़ पायी और न पटरी से हट पायी। वह एक ही जगह खड़ी-खड़ी चिल्लाने लगी। प्लेटफार्म पर खड़ा उसका पिता चीख-चिल्ला रहा था, लेकिन उसे कूद कर उसे बचाने की हिम्मत नहीं पड़ी। थोड़ी दूरी पर खड़े एक सज्जन लम्बी छलाँग मार कर प्लेटफार्म से पटरी पर कूद पड़े। उन्होंने सोचा था कि वह पुत्री को बलपूर्वक पटरी के दूसरी ओर फेंक कर स्वयं भी पटरी पार कर लेंगे, लेकिन पुत्री ने भयभीत होने के कारण उन्हें कस कर पकड़ लिया। किसी प्रकार उससे अपने को छुड़ा कर उन्होंने उसे पटरी के बाहर फेंक ही दिया, लेकिन वह स्वयं पटरी पार नहीं कर पाये। तभी धीमी गति से चले आ रहे इंजन ने जोर से भाप (स्टीम) फेंकी* और वह भाप के धक्के से पटरी के बाहर गिर कर बेहोश हो गये।

उन्हें अस्पताल पहुँचाया गया। वह बच गये, लेकिन सामान्य ढंग से चलने योग्य नहीं रहे। उनके दाँतों और आँखों पर भी बुरा प्रभाव पड़ा।

उनके इस अपूर्व त्याग की बात फैलते देर नहीं लगी। इस बात को ले कर जब लोग उनकी प्रशंसा करते, तब वे कहतेह्नह्न"मैंने कोई विशेष कार्य नहीं किया। जीवन तो दूसरों के लिए ही होता है।"

बच्चो, दूसरों के लिए जीने वाले व्यक्ति ही सचमुच जीते हैं। जो केवल अपने और अपनों के ही लिए जीते हैं, वे जी कर भी नहीं जीते।

---

*चलते हुए इंजन के सामने आ जाने वाले प्राणियों को मरने से बचाने के लिए इंजन के ड्राइवर बहुधा यह उपाय करते हैं (अथवा यदि सम्भव हुआ, तो समय रहते इंजन को रोक देते हैं)।

आप एक पक्षी के रूप में हैं, बहुत सुन्दर गाने वाले पक्षी के रूप में हैं। यह पक्षी पिंजरे के अन्दर है, इधर-उधर उड़ नहीं सकता। परन्तु पिंजरे में जीवन नहीं होताह्नह्नभले ही वह पिंजरा सोने या चाँदी का क्यों न बना हुआ हो। पक्षी गा सकता है। उसको देखते ही आदमी को आनन्द आता है। लेकिन पिंजरे में तो कोई जान नहीं होती। पिंजरे के अन्दर रखे पक्षी में जान है। इसी तरह इस शरीर के अन्दर आप हैं। जो आपका स्वरूप है, वह एक दिव्य रोशनी है, एक ज्योति है। दिन में भी ज्योति है, रात में भी ज्योति है। बाहर भले ही अँधियारा रहता हो; लेकिन आपके अन्दर तो ज्योति हर समय है। आप ज्ञान-स्वरूप हैं। **स्वामी चिदानन्द**

दैवी शक्ति और कृपा में सामंजस्य

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

मानव-जाति को कष्टों से सुखों की ओर, अशान्ति से शान्ति की ओर, अज्ञान और बन्धन से ज्ञान के प्रकाश तथा मुक्ति की ओर के पथ का निर्देश करने के लिए महान् आध्यात्मिक गुरुओं का आगमन ईश-कृपा का कार्य है। वे सब दिव्य कृपा का प्रकटीकरण ही हैं।

भारतीय विशिष्टाद्वैत दर्शन, जिसके सर्वोच्च प्रतिपादक महान् वेदान्ती भक्त रामानुजाचार्य थे, को माँ भगवती की दिव्य कृपा की साकार प्रतिमा और स्वरूप माना गया है। यहाँ तक कि यीशु ने भी कहा हैह्नह्न''मेरे माध्यम के सिवा अन्य किसी प्रकार से कोई परम पिता तक नहीं पहुँच सकता।'' इसी प्रकार विशिष्टाद्वैतवादी कहेगाह्नह्न''लक्ष्मी माँ की अहैतुकी कृपा प्राप्त कर लेने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग भगवान् के चरणों तक पहुँचने का नहीं है। यदि आप भगवती लक्ष्मी को समर्पण कर देते हैं, केवल तभी वह करुणा करके आपको परब्रह्म नारायण के सम्मुख ले जाती है।''

इसके विपरीत पूर्वी भारत में बंगाल तथा अन्य स्थानों में देवी भगवती को पराशक्ति माना गया है। शाक्त उन्हें आदिशक्ति, महाशक्ति और पराशक्ति के रूप में मानते हैं। असंख्य ब्रह्माण्डों के इस दृश्य जगत् की विविधता को लाने वाली वही है। इसलिए देवी माँ की शक्ति ही उपास्य विषय है, यही आध्यात्मिक जीवन और मोक्ष-प्राप्ति में सर्वोच्च परम तत्त्व है। शाक्त दर्शन के अनुसार यही मोक्षदायिनी शक्ति है।

क्या इसमें कुछ विरोध है। देवी माँ की इन दो धारणाओं में क्या परस्पर विरोधाभास है ? क्या बिना किसी विरोधाभास के इनमें परस्पर अनुकूलन दिखाया जा सकता है ? यह परम कृपा और पराशक्तिह्नह्नजो अत्यन्त सुन्दर रूप से उत्पत्ति, स्थिति और संहार इत्यादि समस्त दृष्टिगोचर रूप को लाती है, जो बन्धन और मोक्ष दोनों का कारण भी हैह्नह्नक्या इन दो धारणाओं का सामंजस्य हो सकता है ? हाँ, ऐसा हो सकता है।

यहाँ तक कि अत्यन्त उच्च, अत्युत्तम, अति-गहन विश्लेषण कर सकना और गुरु की आवश्यकता का अनुभव होना, और यह जागरूकता भी हो जाना कि गुरु की ऐसी आवश्यकता होने को आप अनुभव भी कर रहे हैं, यह सब केवल तब ही हो सकता है, जब ईश-कृपा आपको जागरूक कर दे कि आपके मार्ग में बाधा बनने वाले आप स्वयं ही हैं, आपके सिवा अन्य कोई नहीं है। जब तक किसी-न-किसी रूप में इस 'मैं' का आग्रह रहता है, तब तक यह मोक्ष को असम्भव ही बनाये रखता है। यहाँ तक कि यह सूक्ष्म विश्लेषण भी शक्ति का ही कार्य है।

क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि शक्ति कोई स्थूल अथवा बाह्य वस्तु ही हो। एलबर्ट एइन्सटाइन

को सापेक्षता का सिद्धान्त प्रतिपादित करवा देने वाली केवल यह शक्ति ही थी। महान् दार्शनिकों के समस्त कार्य दिव्य माँ की शक्ति का ही प्रकटीकरण हैं। यह अत्यन्त सूक्ष्मतम रूप में है, किन्तु है शक्ति ही। केवल हाथों, पैरों तथा शरीर के गतिशील होने में ही शक्ति की आवश्यकता नहीं होती, प्रत्युत वेदान्तीय सूक्ष्मतम खोजें भी आदि शक्ति का प्रकटीकरण ही हैं।

इसलिए प्रकाश की ओर की इस आन्तरिक सक्रियता के रूप में अमरत्व की ओर की, मोक्ष की ओर की इस गतिशीलता के रूप में यह कृपा ही कार्यरत है। यह निश्चित रूप से कृपा ही कार्यरत हैह्नह्नआपके सूक्ष्म विवेक के रूप में और आपके विचार के रूप में भी। इस प्रकार आपने देखा कि आपके भीतर की शक्ति की गतिशीलता तथा आपके जीवन में कृपा की धारणा, दोनों समरूप ही प्रतीत होती हैं। यह दोनों धारणाएँ मिल कर एक ही रूप धारण कर लेती हैं।

योगवासिष्ठ, भगवद्गीता और आधुनिक उपदेशकों की परम उद्घोषणा हैह्नह्न''उस व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त नहीं होता जो इसकी आकांक्षा तो करता है; किन्तु आकांक्षा-पूर्ति को स्व-प्रयास के रूप में कार्यान्वित करने में असफल रहता है।'' स्व-प्रयास शक्ति का प्रकटीकरण है। इसी को पुरुषार्थ कहते हैं। सच्चिदानन्द की इच्छा, समस्त अपेक्षाओं की पूर्ति की इच्छा और मोक्ष-प्राप्ति के लिए जो-कुछ भी करना आवश्यक है, वह करने की इच्छाह्नह्नयह सब शक्ति का प्रकटीकरण है।

सभी प्रकार की साधना शक्ति और कृपा का सम्मिलित प्रकटीकरण है। भले ही वह ज्ञानयोग-साधना हो, भक्तियोग-साधना हो, कर्मयोग-साधना होह्नह्नयह सब कृपा (यदि यह कृपा नहीं तो फिर और क्या है; यदि यह कुछ है तो केवल कृपा ही है) और मोक्ष की ओर सक्रिय गतिशीलता के रूप में माँ भगवती की मिश्रित अभिव्यक्ति है।

यहाँ यह पूर्णतया सामंजस्यपूर्ण हैं। कुछ भी विरोधाभास नहीं है। यह एक में ही दोनों हैं, दोनों समान रूप से विद्यमान हैं। किसी समय कृपा, गत्यात्मकता प्रतीत होती है और कभी गत्यात्मकता भासती है और कृपा-रूप में जानी जाती है। **'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत'**, यह पुरुषार्थ के लिए आह्वान हैह्नह्नप्रबुद्धता-प्राप्ति के लिए उठो, जागो और जो भी अभीष्ट हो, करो। यह आपकी अन्त:शक्ति के प्रकटीकरण के लिए पुकार है। और इस पुकार का उत्तर देना, यह कृपा की अभिव्यक्ति है।

किन्तु जब कृपा होती है, तभी ऐसा होता है कि पुकार आने पर व्यक्ति उत्तर देता है। यदि कृपा नहीं है, तो भले ही यह पुकार आपके मन, आपके हृदय में सैकड़ों बार गरज कर चिल्लाती रहे, यह जंगल की पुकार मात्र ही बन कर रह जायेगी। कोई भी उत्तर नहीं देगा। किन्तु यदि कृपा है, तो यह तत्क्षण जागरण के रूप में, तत्काल वांछित कर्म के रूप में अभिव्यक्त होगी।

इसलिए हम कृपा और सक्रियता के युग्म तत्त्वों के इस रहस्यमय और अनिर्वचनीय सम्मिश्रण की उपज हैं। और अन्ततोगत्वा विश्लेषण में यह दो नहीं हैं। यह एक ही तत्त्व के दो पहलू हैं। दिव्य क्रियाशीलता, कृपा की विद्यमानता को सिद्ध करती

है। कृपा, दिव्य सक्रियता के रूप में अभिव्यक्त होती है।

और इस सबका मूल स्रोत है, आपकी अन्त: स्थित दिव्यताह्नह्नआपका शाश्वत साथी, आपका कभी भी धोखा न देने वाला निर्देशक मित्र और दार्शनिक, जो कि अन्तत: आपके निज-स्वरूप के रूप में ही जाना जाता है। समस्त शक्ति, समस्त कृपा, आपके अन्तर्मन में, आपकी आध्यात्मिक सत्ता के मूल स्वरूप में निवास करती है। आप उस परम सत्ता में ही रहते हैं और चलते-फिरते हैं, उसमें ही आपका अस्तित्व है। आपके भीतर वह परम सत्ता, आपके अस्तित्व का मुख्य केन्द्र हो कर निवास करती हैह्नह्नआप ही की अन्तरात्मा के रूप में। यह एक विलक्षण रहस्य है। हमें इस अद्‌भुत रहस्य पर मनन करना चाहिए और इस शक्ति की क्रीड़ा का स्थल बन जाना चाहिए, पराशक्ति की कृपा की अभिव्यक्ति का स्थल बन जाना चाहिए।

आपमें से प्रत्येक के जीवन में इस तत्त्व-द्वय का, इस 'एकत्व में द्वि' का पूर्णरूपेण प्रकटीकरण है। यही कारण है कि आप इस उदात्त एवं पावन सत्य पर चिन्तन कर पाने के लिए यहाँ हैं। यदि यह कृपा आपके जीवन में सक्रियता से अभिव्यक्त न हुई होती, तो आज आप यहाँ न होते। इस पर चिन्तन करें! किंचित् इस पर मनन करें!

(अनु. श्रीमती सुधा भारद्वाज)

विशेष छूट

१ जनवरी २००७ से ३० जून २००७ तक

यह सूचित करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष है कि हमने छूट की दरों में परिवर्तन कर दिया है :

पुस्तकों पर छूट

१०० रु. तक की पुस्तकों पर कुछ नहीं

५०० रु. तक की पुस्तकों के आर्डर पर १०%

५०१ रु. से अधिक की पुस्तकों के आर्डर पर २०%

सीडी, कैसेटों तथा वीसीडी पर छूट

किसी भी मूल्य की खरीद पर २०%

('Chidananda—The fountain of Grace; Guru Purnima Darshan 2006' को छोड़ कर)

पैकिंग तथा डाक-व्यय अतिरिक्त।

सभी आर्डरों के साथ ५०% अग्रिम धन-राशि भेजें।

यह छूट केवल भारत में ही भेजने के लिए उपलब्ध है।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, द शिवानन्द पब्लीकेशन लीग

पोस्ट : शिवानन्दनगरह्नह्न२४९१९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तरांचल (हिमालय), भारत

फोन : (९१) ०१३५-२४३४७८०, २४३००४०; E-mail: managerspl@hotmail.com

दिनचर्या का पालन करो

ज्योति-सन्तानो!

आशा है, तुम स्वस्थ होगे। इस समय शायद तुम लोग यह कार्यक्रम बनाने में लगे होगे कि गरमी का अवकाश कैसे बिताया जाये। पर ध्यान रखो, अपना सारा समय खेल-कूद और व्यर्थ की गपशप में मत बिताना। एक काम करो। एक दिनचर्या बना लो और कड़ाई से उसका पालन करो। बिलकुल बड़े सबेरे अर्थात् साढ़े चार बजे उठ जाओ। ईश्वर का नाम लो। हाथ-मुँह धो कर कम-से-कम आधा घण्टा प्रार्थना करो या भजन गाओ। फिर पढ़ाई में लगो। कौन-कौन-से दिन क्या-क्या पढ़ना है, इसका भी क्रम बना लो। दो-ढाई घण्टा पढ़ चुकने के बाद दूध, दो-एक बिस्कुट या ऐसा ही कुछ जलपान कर लो। फिर अपनी माता या किसी दूसरे के घरेलू काम में हाथ बँटाओ। फिर स्नान करके लगभग पन्दरह मिनट तक ईश्वर का भजन करो। खाना चाहे कितना भी स्वादिष्ट लगे, पर अधिक मत खाओ। अधिक खाने से आलस्य बढ़ेगा और स्वास्थ्य बिगड़ जायेगा। उसके बाद घण्टा-भर आराम करो। फिर पढ़ाई में लगो और घर पर करने के लिए पढ़ाई का जो काम हो, उसे कर डालो। कुछ आराम करो। आराम के समय माता-पिता से या भाई-बहन से अच्छी धार्मिक बातें कर सकते हो। दोपहर बाद खेलने के लिए बाहर जाओ। शाम होने लगे, तो टहलने जाओ। शाम को घर लौट कर हाथ-पैर धोओ, आधा घण्टा भजन करो और पढाई करो। उसके बाद रात का भोजन करो। लगभग पन्दरह मिनट आराम करो या टहलो। साढ़े नौ बजे सो जाओ; पर सोने से पहले पन्दरह मिनट प्रार्थना करो, बिस्तर पर लेटे-लेटे ईश्वर का ध्यान करो।

जल्दी सोये, जल्दी जागे
तनिक नहीं दु:ख पाये।
बुद्धि और स्वास्थ्य बढ़े,
धन उसके घर आये॥

इस वाक्य को दश बार पढ़ो और याद कर लो। क्या तुम अब बिना देखे ही इसे कह सकते हो? केवल याद कर लेना ही काफी नहीं है। जैसा कहते हो, वैसा करना भी होगा।

तब तुम बहुत अच्छे बच्चे बनोगे और सब लोग तुमसे प्यार करेंगे। ईश्वर तुम पर प्रसन्न होगा। भगवान् तुम्हारा भला करे! प्रत्येक साधक को दूसरों में ईश्वर की भावना करनी चाहिए। दूसरों के अवगुणों को देखने की वृत्ति का त्याग करने से हमारी चेतना निर्मलतर होती जाती है। जो व्यक्ति दूसरों के दोषों को देखता है, वह सचमुच दूसरों के नहीं, अपने ही दोषों को उनमें प्रतिबिम्बित देखता है। दूसरों के अवगुणों को देखने से हमारा जीवन उनसे प्रभावित होने लग जायेगा। दूसरों में ईश्वरीयता के दर्शन करने से हमारी नैतिकता का विकास होने लगता है।

स्वामी शिवानन्द

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम'

''भूखे को भोजन खिलाओ। वस्त्रहीन को वस्त्र पहनाओ। रोगियों की सेवा करो।'' गुरुदेव के इस आदर्श वाक्य के अनुसार दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश 'शिवानन्द होम, लक्ष्मणझूला' की सुविधाओं के माध्यम से भगवत्स्वरूप रोगियों, गरीबों तथा उपेक्षित भाई-बहनों की पूर्ण देख-रेख, सेवा-सुश्रुषा करने का पूर्ण विनम्रतापूर्वक प्रयास करता है।

यह उपेक्षित अकिंचन भाई-बहन ही वास्तव में हमारे वह दयानिधान प्रभु, कृपालु भगवान् करुणानिधान हैं, ''जो हमारे वस्त्र हैं, जो हमसे लिपटे हैं तथा हमें पकड़े हुए हैं, जो हमें प्रेम से ओत-प्रोत किये हुए हैं, जो हमें कभी भी नहीं छोड़ेंगे।'' (सेन्ट जूलियन)

इस दृढ़ सत्य के आनन्द की खुशीह्नह्नयह जानना कि अन्ततः हम सब एक ही हैं, समान प्राणी हैं, उसके छोटे से बच्चे हैंह्नह्नऐसी खुशियों का उत्सव इस माह में होली के त्यौहार में अन्तेवासियों के द्वारा मनाया गया।

पूर्व और पश्चिम से, उत्तर और दक्षिण से, दूर-दूर से आ कर इकट्ठे हुए, ये सब आये हुए तथा अन्य सभी स्थानों से आये हुए ये घर-विहीन, सम्बन्धियों से विहीन लोग आज एक साथ मिल-जुल गये तथा परम पिता शिवानन्द के उस 'होम' में दैनिक जीवन के सुख व दु:ख आपस में बाँट रहे हैं, जो आज चमकदार सुन्दर रंगों में रँगा हुआ है। यह सब लोग अपने चेहरे में सुन्दर मुस्कान लिये हुए, दिलों में खुशियाँ समाये हुए हैं और आज सब भ्रातृत्व (भाई-चारा) की भावना से एक हो गये हैं।

मनुष्यों के लिए तो बहुत रहस्य हैं, लेकिन परमात्मा को सब-कुछ ज्ञात है। वही परमात्मा अपने अलौकिक विधि-विधान के अनुसार रोगियों को यहाँ भेजता है। निस्तब्ध चीत्कार उसको द्रवित कर देती है। मूक प्रार्थनाएँ उस तक पहुँच जाती हैं, वेदनाएँ उसको छू लेती हैं।

इस महीने एक साधु बाबा को गम्भीर बीमारी की स्थिति में आश्रम मुख्यालय से यहाँ ला कर भर्ती किया गया। वह साँस लेने में तड़फ रहा था बेहोश हो गया था। वह बुरी तरह कुपोषणग्रस्त था। उसका शरीर ठण्ढा पड़ गया था। ऐसा लग रहा था कि वह किसी भी क्षण अन्तिम साँस ले लेगा। लेकिन यह अद्‌भुत चमत्कार है कि जब उसको इंजेक्शन और दवाइयाँ दी गयीं, उसे होश आ गया, उसने अपना नाम बताया

और कहा कि वह बहुत दूर अल्मोड़ा से आया है। प्रयोगशाला में उसके परीक्षण से पता चला कि वह बहुत बड़ी संक्रामक फेफड़े की टी.बी. से पीड़ित है। जब उसे होश आया, तो उसने बहुत बड़ी मात्रा में कफ निकालना शुरू कर दिया। उसको पवित्र गंगाजल दिया गया। अगले दिन प्रात:काल ब्राह्ममुहूर्त में वह इस संसार से चल दिया। उसकी आत्मा परम आनन्द में विश्राम करे तथा उसमें विलीन हो जाये!

ॐ नम: शिवाय।

''तुम्हारी दया के ही एक अंश
तुम्हारी कृपा के कारण ही हम यहाँ हैं।
तुम्हारे दर्शनों की चाह से आये हैं हम,
तुम्हारे हाथों के चमत्कारह्रइस संसार को देखने नहीं।
तुम सा और कोई नहीं,
इतना विश्वसनीय और इतना सच!
जो-कुछ किया तुमने हमारे लिए
उसका कर सकते हैं हम बस केवल धन्यवाद!''

(डॉन मोयन)

शिवानन्द आश्रम में २२ अप्रैल २००७ को श्री जगद्गुरु आदि शंकराचार्य जयन्ती महोत्सव

आश्रम में श्री जगद्गुरु आदि शंकराचार्य जयन्ती का उत्सव सुअवसरानुकूल विधिवत् परम्परागत पावनता से तथा भव्यता से मनाया गया।

समस्त कार्यक्रम श्री विश्वनाथ मन्दिर के परिसर में आदि शंकराचार्य भगवान् की सौम्य सुन्दर प्रतिमा के समक्ष मनाया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, महासचिव, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय द्वारा प्रार्थना और संकीर्तन के माध्यम से परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज से भक्तिपूर्ण, समर्पित और विनम्र जीवन जीने के लिए आशीर्वाद प्राप्त करते हुए किया गया।

पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने जगद्गुरु शंकराचार्य के जीवन सम्बन्धी अत्यन्त प्रेरणास्पद तथ्यों के सम्बन्ध में बताया तथा साथ ही मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र के वास्तविक अर्थ भी बताये।

प्रोफेसर श्री वासुदेव रणदेव जी ने श्री शंकराचार्य जी के दर्शन तथा उनके ब्रह्म, माया, अविद्या और अध्यास सम्बन्धी विचारों पर प्रवचन दिया। केवल विद्या से ही मुक्ति प्राप्त होती है।

श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज ने शंकराचार्य जी की शिक्षाओं के भक्तिमय पक्ष पर प्रकाश डाला। अपने प्रवचन में उन्होंने कहा कि शंकराचार्य जी शुष्क दार्शनिक नहीं थे, प्रत्युत एक भक्त हृदयी चिन्तक थे। उनका मानना था कि भगवान् का नाम हृदय की गहराइयों से निकलना चाहिए। जब व्यक्ति का अहं गिरता है, तब ही दिव्यता के द्वार खुलते हैं।

श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने कार्यक्रम का समापन अपने प्रवचन के द्वारा यह बताते हुए किया कि किस प्रकार भगवान् शंकर ने शंकराचार्य जी को चाण्डाल के रूप में दर्शन दिये थे और कैसे बताया था कि किस प्रकार सभी जीवों में ब्रह्म को ही देखना चाहिए। आरती और प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

□ □ □

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

(१) विशेष अवसर

(अ) स्थापना-दिन समारोह

अम्बाला (हरियाणा): शाखा ने 'स्वामी शिवानन्द सब्रवाल सत्संग भवन' के उद्घाटन के ८ वें वार्षिक-दिन के अवसर पर, दिनांक २५ मार्च २००७ को एक विशेष सत्संग का आयोजन किया।

बड़कुआँल (उड़ीसा): परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने दिनांक ४ जनवरी को 'स्वामी शिवानन्द सत्संग आश्रम' को उद्घाटित किया। उनके आगमन पर उनका तथा आदरणीय श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी का सम्पूर्ण सन्मान सहित स्वागत किया गया तथा उन्हें नगर-संकीर्तन की दीर्घ शोभायात्रा के रूप में विधिपूर्वक ले गये। उभय स्वामीजिओं ने पादुका-पूजन में भाग लिया तथा प्रवचन दिये। द्वितीय दिन, १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड संकीर्तन, मन्त्रदीक्षा (४५ भक्तों को दीक्षित किये गये) तथा एक विशेष सत्संग आयोजित हुए। तीन ही कार्यक्रमों में बहुसंख्य भक्त प्रतिभागी हुए।

भंजनगर (उड़ीसा): शाखा ने वर्ष १९५० में, दिनांक जनवरी २५ के, स्व-स्थापना-दिन को विविध आध्यात्मिक कार्यक्रमों से मनाया, जिसमें ३०० भक्त सपरिवार उपस्थित थे।

खाटिगुडा (उड़ीसा): निज स्थापना-दिन को मनाने के लिए शाखा ने दिनांक २७-२८ जनवरी को विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया। आदरणीय श्री स्वामी नारायणपादानन्द जी ने विशेष सत्संगों, ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा में, महामन्त्र संकीर्तन में, प्रभातफेरी में, पादुका-पूजन में, पारितोषिक-वितरण में, आध्यात्मिक प्रवचनों में और नारायण-सेवा में निज उपस्थिति दी।

लँगथाबाल (मणिपुर): शाखा ने निज स्थापना-दिन, मार्च माह के दिनांक २० को एक विशेष सत्संग परिचालित किया।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा दिनांक ७ फरवरी को एक स्थानिक महात्मा और २०० भक्तों की उपस्थिति में 'स्वामी शिवानन्द भजन मन्दिर' में भगवान् विश्वनाथ का प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित हुआ। नवरात्रि की अवधि में आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी द्वारा माँ दुर्गादेवी की प्राण-प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। इस पावन अवसर पर एक हवन आयोजित किया गया।

नीमापडा (उड़ीसा): परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी शिवस्वरूपानन्द जी, आदरण ीय श्री स्वामी

त्यागस्वरूपानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी गुरुप्रेमानन्द जी और आदरणीय श्री स्वामी सदाशिवानन्द जी ने स्व-प्रेरक उपस्थिति से, दिनांक जनवरी ३० को शाखा के स्थापना-दिन के कार्यक्रमों की शोभा में अभिवृद्धि की। पूर्ण दिन के आयोजित कार्यक्रमों में श्रीमद्भगवद्गीता पारायण, नगर-संकीर्तन, नारायण-सेवा और टाउन हाल में जाहीर कार्यक्रम आदि समाविष्ट थे।

राउरकेला, फर्टिलाइज़र टाउनशिप (उड़ीसा): शाखा ने दिनांक २६ फरवरी को स्व-स्थापना-दिन के अवसर पर श्रीमद्भगवद्गीता का दस दिवसीय ज्ञान-सत्र आयोजित किया। समापन के दिन, दिनांक ७ मार्च को निर्धनों को अन्नदान हुआ।

सुनाबेडा, महिला शाखा (उड़ीसा): शाखा ने दिनांक १५ फरवरी को स्व-स्थापना के दस वर्ष के त्वरित आध्यात्मिक कार्यक्रमों की सम्पन्नता के साथ-साथ दिनांक १४, १५ और १६ फरवरी को, विविध आध्यात्मिक प्रवृत्तियों से युक्त एक सुआयोजित तीन दिवसीय उत्सव किया। तीनों दिन एक-एक पत्रिका का विमोचन करके नि:शुल्क वितरित की गयी। स्थानिक महानुभावों सहित बहुसंख्य व्यक्तियों ने कार्यक्रमों में उपस्थिति दी। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज के प्रवचन, दि एॅरोनॉटीक्स कॉलेज, नालको इंजीनियरिंग कॉलेज और स्थानिक विद्यालयों में आयोजित किये गये। आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी ने, कार्यक्रमों में निज पवित्र उपस्थिति दी।

(ब) श्री महाशिवरात्रि

हमें अनेक शाखाओं के श्री महाशिवरात्रिपर्व के विविध कार्यक्रमों के अहवाल प्राप्त हुए हैं। गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़) शाखा ने १५ दिन पर्यन्त, लगातार अखण्ड कीर्तन, प्रभातफेरी, पंचकुण्डीय यज्ञ, रात्रिभर ४ प्रहरीय पूजा, भण्डारा इत्यादि आयोजित किये। भुवनेश्वर (उड़ीसा) ने २४ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप तथा रात्रि-पूजा आदि की सम्पन्नता की। १२ घण्टों पर्यन्त दिनावधि में अखण्ड जप और ४ प्रहरीय पूजाओं की पूर्णता बुधिया उस्ताँ (३०० प्रतिभागी), कौहंडा (छत्तीसगढ़), बेलागुंठा, राउरकेला, सालेपुर, सुनाबेडा और सुनाबेडा महिला शाखा (उड़ीसा) में की गयी। रात्रि-जागरण और पूजा अहिवारा (छत्तीसगढ़), घाटपदमुर, जगदालपुर (छत्तीसगढ़) और नीमापड़ा (उड़ीसा) में सम्पन्न हुए। रुद्राभिषेक, विशेष पूजा, विशेष सत्संग और अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रमों की पूर्णता के अहवाल अहमदाबाद-उस्मानपुरा (गुजरात), बेंगलूरु (कर्नाटक), बरबिल् (उड़ीसा), बीकानेर (राजस्थान), बुर्ला (उड़ीसा) जयपुर (राजस्थान), खाटिगुडा (उड़ीसा), नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़), नई दिल्ली-लाजपतनगर, नौगाँव (उड़ीसा), सुनाबेडा (उड़ीसा) और विक्रमपुर (उड़ीसा) की शाखाओं से प्राप्त हुए हैं।

(क) श्री रामनवमी

प्रमुख कार्यक्रमों में से कुछ निम्नानुसार थे :

अम्बाला (हरियाणा): श्री सुन्दरकाण्ड पारायण।

बेंगलूरु (कर्नाटक) : श्री रामायण विषयक नव-दिवसीय प्रवचन।

बारिपदा (उड़ीसा): विशेष पूजा आदि।

भुवनेश्वर (उड़ीसा) : ६ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन।

बीकानेर (राजस्थान): श्री रामायण तथा श्री दुर्गासप्तशती के पारायण, विशेष पूजा आदि।

दुकड़ा (उड़ीसा): नव-दिवसीय रामायण पारायण।

घाटपदमुर, जगदालपुर (उड़ीसा): नव-दिवसीय रामायण पारायण, ३ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन, विशेष पूजा, हवन आदि।

गुमरगुण्डा (उड़ीसा): श्री रामायण और श्री दुर्गासप्तशती के पारायण, १२ घण्टों पर्यन्त विशेष पूजा, हवन आदि।

रायगढ़ (छत्तीसगढ़): विशेष सत्संग, पूजा।

सालेपुर (उड़ीसा): 'मनाचे श्लोक' के स्वाध्याय सहित २४ घण्टों पर्यन्त आध्यात्मिक कार्यक्रम।

सुनाबेडा महिला शाखा (उड़ीसा) : श्री रामायण का नव-दिवसीय पारायण।

(ड) जयन्ती, पुण्यतिथि

अनेक शाखाओं द्वारा प्रति मास मनाये जाते शिवानन्द-दिन और चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजन, १२ घण्टों का अखण्ड जप, विशेष सत्संग और अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रमों के विषय में अहवाल प्राप्त हुए हैं। नई दिल्ली-लाजपतनगर और जयपुर शाखाओं ने दिनांक ४ फरवरी को परम पूज्य श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, महायज्ञ इत्यादि कार्यक्रम आयोजित किये। परम पूज्य श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि को भुवनेश्वर शाखा ने परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की उपस्थिति में विविध कार्यक्रम सम्पन्न किये।

(इ) अन्य सुअवसरों तथा गतिविधियाँ

बीकानेर और लँगथाबाल शाखाओं ने श्री महावीर जयन्ती को खास कार्यक्रम आयोजित किये। नूतन वर्ष के विशेष कार्यक्रम भुवनेश्वर, चण्डीगढ़, छत्रपुर (उड़ीसा) शाखाओं द्वारा तथा समीपवर्ती ग्राम में नीमापड़ा शाखा ने सम्पन्न किये। कई शाखाओं ने संक्रान्ति, पूर्णिमा, अमावास्या और उभय एकादशियों के और श्री गौरांग महाप्रभु की जयन्तीह्नह्नहोली को विशेष सत्संग, जप-यज्ञ, श्रीमद्भगवद्गीता और श्री विष्णु सहस्रनाम के पारायण आदि पूर्ण किये। अनेक शाखाएँ नियमित रूप से १२ घण्टों का अखण्ड जप सम्पन्न करती हैं। किन्तु विशाखपटनम् (आन्ध्र प्रदेश) शाखा ने दिनांक १३-१४ फरवरी को २४ घण्टों पर्यन्त महामन्त्र का अखण्ड जप आयोजित किया।

(२) ज्ञानसत्र

भीमकाण्ड (उड़ीसा) शाखा ने दिनांक ३ से १० फरवरी पर्यन्त, एवं दिनांक २३ से २९ जनवरी पर्यन्त नीमापाडा शाखा ने श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण और कथा सुआयोजित किये। भुवनेश्वर शाखा द्वारा

दिनांक २ से ५ जनवरी पर्यन्त 'श्रीमद् भागवतम्' पर प्रवचन तथा 'गीता ज्ञानयज्ञ' सम्पन्न हुए। जयपुर शाखा ने दिनांक ७ से २२ जनवरी की समयावधि में श्रीमद् भगवद्गीता पर प्रवचन तथा दिनांक ११ से १७ फरवरी की दिनावधि में श्री रामायण पर प्रवचन आयोजित किये। दिनांक १६-१७ फरवरी को २९ घण्टों पर्यन्त श्री रामायण का अखण्ड पारायण परिचालित किया। नई दिल्ली-लाजपतनगर शाखा ने दिनांक २५ मार्च से दैनिक प्रवचन की गतिविधि पूर्ण की। अनेक शाखाओं ने वासंतिक नवरात्रि में श्री रामायण का नवदिवसीय पारायण सफलता से सम्पन्न किया। बड़कुआँल शाखा ने दिनांक २४, २५ और २६ मार्च को श्री रामायण का पारायण परिचालित किया।

(३) साधना शिविर

बहुत शाखाएँ नियमित रूप से 'मासिक साधना-दिन' मनाती हैं। आध्यात्मिक कार्यक्रमों के पश्चात् अकिंचनों को अन्नदान होता है तथा भक्तगण प्रसादस्वरूप में मध्याह्न-भोजन लेते हैं। राउरकेला की उभय शाखाओं द्वारा दिनांक १८ फरवरी को आयोजित आध्यात्मिक शिविरों में २५० प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक लाभ लिया।

(४) सन्तों का आगमन तथा भेंट

वरिष्ठ सन्तों की शाखाओं की भेंट के महान् अवसर पर उत्साहपूर्वक स्वागत तथा उत्सव करने के विषय में जैसे पूर्व वर्णित किया था, उस प्रकार दिनांक १९ जनवरी को परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने भद्राचलम् (आन्ध्र प्रदेश) शाखा के श्री शिवानन्द आश्रम की मुलाकात ली। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने दिनांक ६ फरवरी को भीमकाण्ड शाखा, दिनांक ६-७ जनवरी को भुवनेश्वर शाखा और आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी सहित दिनांक १८-१९ फरवरी को जयपुर (उड़ीसा) शाखा की भेंट की। कार्यक्रमों में स्वागत-शोभायात्रा, प्रात:कालीन ध्यान, विशेष सत्संग (३०० भक्तों की उपस्थिति), जाहीर प्रवचन इत्यादि समाविष्ट थे। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज व आदरणीय श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी ने ५०० भक्तों की उपस्थिति में विक्रमपुर शाखा के साधना-शिविर का परिचालन किया। विलासपुर (छत्तीसगढ़) शाखा ने आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी को निमन्त्रित करके दिनांक २३-२४ मार्च को जाहीर प्रवचन, मन्त्र-दीक्षा तथा अन्य कार्यक्रम आयोजित किये।

(५) योगासन तालीम और कैम्प

दैनिक योगासन-प्राणायाम-ध्यान वर्ग अथवा सत्र, महिलाएँ तथा पुरुषवर्ग के लिए भिन्न सत्रों में गान्धीनगर और सुनाबेडा शाखाओं द्वारा एवं सामान्य सत्र में अहमदाबाद-उस्मानपुरा, भुवनेश्वर, बीकानेर, घाटपदमुर-जगदालपुर, गुमरगुण्डा, खुर्जा (उत्तर प्रदेश), जयपुर, नई दिल्ली-लाजपतनगर और सालेपुर शाखाओं द्वारा परिचालित किये जाते हैं। आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने दिनांक १० से १६ फरवरी को (१४० तालीमार्थी) गान्धीनगर में और दिनांक १४-२२ और मार्च २२-२८ में लाडवा-कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में योगासन कैम्प सम्पन्न किये। अन्य योग कैम्प, दिनांक १-१० जनवरी को भुवनेश्वर में, दिनांक २४ फरवरी को कॉलेज फैकल्टी और शिक्षार्थियों के लिए सालेपुर में तथा विजयवाडा (आन्ध्र प्रदेश) शाखा में स्कूल-छात्रों (४०० तालीमार्थी) के लिए परिचालित हुए।

(६) समाज-सेवा

(क) निर्धनों को चिकित्सिकीय सहाय

अहमदाबाद-उस्मानपुरा शाखा ने मोतीबिन्दू की शल्यक्रिया कराने वाले ४० मरीजों को आर्थिक तथा अन्य सहाय की। बारिपदा शाखा कुष्ठरोगियों की एक संस्था के अन्तेवासियों हेतु दवाइयों का नि:शुल्क वितरण करती है। चण्डीगढ़ शाखा ने नियमित रूप से, प्रति माह के द्वितीय और चतुर्थ रविवारों को चिकित्सिकीय परीक्षण के नि:शुल्क कैम्प के अतिरिक्त दिनांक २६ जनवरी को पंचकूला (हरियाणा) में निराधार बालकों के गृह में भी एक मेडिकल कैम्प सम्पन्न किया। आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने भी उस कैम्प की भेंट की। नई दिल्ली-लाजपतनगर शाखा 'शिवानन्द सत्संग भवन' में प्रति रविवार को मेडिकल परीक्षण तथा उपचार करती है। शिवानन्द चैरिटेबल चिकित्सालय, शिवानन्द आश्रमह्न्ह्नराउरकेला, रक्त-परीक्षण, अन्य परीक्षण, औषधियाँ आदि की सुविधाएँ देती है। साउथ बलाण्डा (उड़ीसा) शाखा अत्यन्त निर्धन वसाहत में माह में द्विवार, नियमित रूप से, मेडिकल कैम्प आयोजित करती है। लगभग ४०० मरीजह्न्ह्न२०० बालकों, १६० स्त्रियाँ और ४० पुरुष प्रति माह लाभान्वित होते हैं। सुनाबेडा शाखा की रविवारीय चिकित्सिकीय सेवा प्रति माह लगभग २०० मरीजों के उपचार करती है।

अनेक शाखाएँ चैरिटेबल होमियोपैथिक चिकित्सालय सम्पन्न करती हैं। अम्बाला शाखा के प्रमुख डा. ओ. पी. शर्मा दो औषधालयों में दैनिक रूप से सेवाएँ देते हैं।

गत दो माहों की अवधि में बरबिल् शाखा द्वारा ८४७, जयपुर शाखा द्वारा १६९६ और सालेपुर शाखा द्वारा ५८२ मरीजों के उपचार किये गये।

(ख) नारायण-सेवा

गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का निर्धन, निराधार और पीड़ितों की सेवा करने के उत्साह का, मुख्यालय, बहुसंख्य शाखाएँ और भक्तों द्वारा अनुकरण, अनुसरण द्वारा सुन्दर प्रतिभाव दिया जाता

है। सब विशेष अवसरोंह्रह्रवार्षिक-दिन, मासिक शिवानन्द-दिन, चिदानन्द-दिन, साधना-दिन, संक्रान्ति, ग्रहणह्रह्रपर शाखाएँ निर्धनों को अन्नदान करती हैं। कई शाखाएँ अकिंचनों के कल्याण को निज नियमित गतिविधियों के रूप में अपनाती हैं। बारिपदा शाखा कुष्ठरोगियों की संस्था में अन्नदान और चण्डीगढ़ शाखा निर्धनों के लिए प्रति माह द्विवार भण्डारे का आयोजन करती है। भद्राचलम् (आन्ध्र प्रदेश) शाखा ने उनकी नारायण-सेवा की शताब्दी पूर्ति में १५२ निर्धन व्यक्तियों को अन्नदान और ९२ अकिंचन व्यक्तियों को वस्त्रदान सम्पन्न किये। जयपुर शाखा दैनिक रूप से २५०-३०० दीन-हीन व्यक्तियों को अन्नदान तथा एक कुष्ठरोगियों की वसाहत में लगभग ९० किलोग्राम कोरे राशन की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। वही शाखा निर्धन छात्रों तथा विधवा स्त्रियों को आर्थिक सहाय नियमित रूप से करती है। खुर्जा (उत्तर प्रदेश) शाखा प्रति माह दिनांक १ को निर्धनों की पूर्ण सहाय करती है। नई दिल्ली-लाजपतनगर शाखा हर माह के दिनांक ५ को १५० छात्रों को पोषक चीज-वस्तुएँ और दूध वितरित करती है। राउरकेला शाखा अन्ध छात्रों को चिकित्सिकीय परीक्षण, औषधियों का वितरण और सत्संग सम्पन्न करती है।

(७) नियमित आध्यात्मिक गतिविधियाँ

उपरोक्त शाखाओं के अतिरिक्त नाभा (पंजाब), नलगोंडा (आन्ध्र प्रदेश), नई दिल्ली (वसन्त विहार), श्रीकाकुलम् (आन्ध्र प्रदेश) और वाराणसी (उत्तर प्रदेश) शाखाओं ने भी नियमित आध्यात्मिक गतिविधियों के अहवाल दिये हैं।

विदेशी शाखाएँ

हाँगकाँग (चीन): शाखा के प्रति माह के द्वितीय शनिवार को आयोजित होने वाले मासिक सत्संग में महामृत्युंजय मन्त्र का कीर्तन १ घण्टे पर्यन्त और गुरुदेव की पुस्तकों का स्वाध्याय समाविष्ट हैं। शेष शनिवारों को लगभग १०० भक्त १ घण्टे के महामन्त्र के संकीर्तन में संलग्न होते हैं। शाखा द्वारा मार्च २००७ के माह में योगासन-प्राणायाम-ध्यान के २५ वर्ग परिचालित हुए। दिनांक १६-१२-२००६ से दिनांक ३१-३-२००७ की अवधि में 'समन्वय योग का सैद्धान्तिक अभ्यासक्रम और उसकी प्रायोगिक प्रत्यक्ष रीति' विषय पर योगशिक्षक-तालीम वर्ग सम्पन्न हुए, जिसमें ४६ प्रतिभागियों ने और 'योग का अभ्यास और प्रत्यक्ष उपयोग' विषय के मार्च माह के वर्ग में १२ योगशिक्षकों ने भाग लिया।